अध्याय 15

शरीर के अशुद्ध स्राव के कारण अशुद्धता

लैव्यव्यवस्था 15 अशुद्धता से संबंधित समस्याओं का समाधान करने के साथ समाप्त होता है। अध्याय 11 में शुद्ध और अशुद्ध जानवरों (विशेषकर इस्राएली लोग जिन जानवरों को नहीं खा सकते थे और जिन जानवरों को वे खा सकते थे) का वर्गीकरण करता है। अध्याय 12 एक स्त्री का बच्चे पैदा करने से संबंधित अशुद्धता के बारे में बताता है। अध्याय 13 और 14, कोढ़ (एक चर्म रोग या चर्म से संबंधित कोई भी रोग) से प्रभावित मनुष्यों, वस्त्र या घर के साथ क्या किया जाना चाहिए था, के बारे में बताता है। अध्याय 15 स्त्री और पुरुष दोनों का यौन क्रीड़ा से संबंधित - विशेषकर उनके जनानंगों से स्खलन के कारण हुए अशुद्धता और उससे शुद्ध होने के लिए धार्मिक रीति रिवाज़ की व्यवस्था बताता है।

इस अध्याय को पाँच भागों में बांटा जा सकता है : (1) आयत 1 से लेकर 15, पुरुष के प्रमेह के बारे में बताता है। (2) आयत 16 से 17, पुरुष के वीर्य स्खलन के बारे में बताता है। (3) आयत 18 पुरुष का स्त्री के साथ प्रसंग के दौरान हुए वीर्य स्खलन के बारे में बताता है जिसमें दोनों ही अशुद्ध हो जाते हैं। तब आयत 19 से लेकर 30, एक स्त्री का असामान्य व सामान्य ऋतुमति के बारे में बताता है, लेकिन पुरुषों को दिए गए पिछला निर्देश का क्रम पलट दिया गया है: (4) आयत 19 से 24 यह बताता है कि एक स्त्री के *सामान्य* मासिक धर्म की अवस्था में क्या किया जाना चाहिए, और (5) आयत 25 से लेकर 30 में यह बताया गया है कि जब *असामान्य* मासिक धर्म हो तो तब क्या किया जाना चाहिए था। इस अध्याय के अंतिम तीन आयत इस विषय वस्तु का सारांश प्रस्तुत करता है।

इस अध्याय का पाँच भाग एक व्यत्यासिका का निर्माण करते हैं:[1]

A1: एक पुरुष का असामान्य, दीर्घकालीन प्रमेह (15:1-15)
B1: एक पुरुष का सामान्य, लघुकालीन वीर्य स्खलन (15:16, 17)
C: एक स्त्री और पुरुष का प्रसंग (15:18)
B2: एक स्त्री का सामान्य, लघुकालीन ऋतुमति होना (15:19-24)
A2: एक स्त्री का असामान्य, दीर्घकालीन ऋतुमति होना (15:25-30)

यह संरचना शारीरिक स्खलन के कारण हुए अशुद्धता, स्त्री और पुरुष दोनों में

समानता दिखाती है। स्त्री और पुरुष दोनों में इस प्रकार का सामान्य और असामान्य शारीरिक स्खलन संभव है; परमेश्वर के लोगों के लिए, ये सभी अशुद्धता के स्रोत हैं। दोनों में शारीरिक स्खलन का कारण एक ही था और इससे शुद्ध होने के भी एक ही उपचार थे, जिसमें असामान्य स्खलन से शुद्ध होने के लिए दिए जाने वाले भेंट भी सम्मिलित था।

एक व्यत्यासिका की संरचना इसकी महत्वपूर्ण केन्द्रीय अंश की ओर संकेत करती है। इस संदर्भ में, संरचना का केंद्र एक आयत है जो स्त्री और पुरुष दोनों से संबंध रखता है, जो पति और उसकी पत्नी के बीच सामान्य यौन संबंध बताती है। इसका निहितार्थ यह है कि परमेश्वर, एक पुरुष और उसके पत्नी के बीच यौन संबंध को मानवीय जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग समझता है।

पुरुष की अशुद्धता (15:1-18)

प्रमेह के कारण पुरुष की अशुद्धता (15:1-12)

[1]फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [2]"इस्राएलियों से कहो कि जिस जिस पुरुष के प्रमेह हो, तो वह प्रमेह के कारण अशुद्ध ठहरे। [3]वह चाहे बहता रहे, चाहे बहना बन्द भी हो, तौभी उसकी अशुद्धता बनी रहेगी। [4]जिसके प्रमेह हो वह जिस-जिस बिछौने पर लेटे वह अशुद्ध ठहरे, और जिस-जिस वस्तु पर वह बैठे वह भी अशुद्ध ठहरे। [5]और जो कोई उसके बिछौने को छूए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध ठहरा रहे। [6]और जिसके प्रमेह हो और वह जिस वस्तु पर बैठा हो, उस पर जो कोई बैठे वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध ठहरा रहे। [7]और जिसके प्रमेह हो उससे जो कोई छू जाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे और साँझ तक अशुद्ध रहे। [8]और जिसके प्रमेह हो यदि वह किसी शुद्ध मनुष्य पर थूके, तो वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। [9]और जिसके प्रमेह हो वह सवारी की जिस वस्तु पर बैठे वह अशुद्ध ठहरे। [10]और जो कोई किसी वस्तु को जो उसके नीचे रही हो छूए, वह साँझ तक अशुद्ध रहे; और जो कोई ऐसी किसी वस्तु को उठाए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। [11]और जिसके प्रमेह हो वह जिस किसी को बिना हाथ धोए छूए वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। [12]और जिसके प्रमेह हो वह मिट्टी के जिस किसी पात्र को छूए वह तोड़ डाला जाए, और काठ के सब प्रकार के पात्र जल से धोए जाएँ।

अशुद्धता से संबंधित निर्देश पुरुष के प्रमेह से शुद्ध होने के साथ प्रारंभ होता है।

आयतें 1-3. व्यवस्था की घोषणा इस वक्तव्य से प्रारंभ होता है कि व्यवस्था किसने दी: **यहोवा ने।** यह वक्तव्य यह भी बताता है कि ये व्यवस्था किसको कहा

गया था: **मूसा और हारून को**। अंततः पाठक को यह भी बताया गया था कि किस उद्देश्य से यह व्यवस्था दी गई थी: ताकि मूसा और हारून **इस्राएलियों से कहे**, ताकि वे इन व्यवस्थाओं को सीखा सकें (देखें 10:10)।

अशुद्धता की परिभाषा। पुस्तक के इस भाग के शीर्षक को ध्यान में रखते हुए, इस अनुच्छेद के विषयवस्तु को पुरुष के **शरीर से निकलने वाले प्रमेह** से परिभाषित किया गया है जो **उसे अशुद्ध** ठहराता है। इस अध्याय में "शरीर" (בָּשָׂר, *बसार*, अक्षरशः, "देह") "जनानंगों की व्यंजना है ([देखें] उत्पत्ति 17:14; यहेज. 23:20, यहाँ भी इसी इब्रानी शब्द का प्रयोग किया गया है)।"[2] शरीर के इस प्रमेह को परिभाषित नहीं किया गया है, केवल इतना कहा गया है कि यदि यह **बहता रहे**:[3] कभी-कभी पुरुष का शरीर इसे बहने देता है तो कभी-कभी यह इसे बहने से रोक देता है। "स्खलन" या "बहना" क्या था? यह स्पष्ट जान पड़ता है कि यह असामान्य था, क्योंकि सामान्य उत्सर्जन के बारे में इस अध्याय में ही अलग से संबोधित किया गया है; लेकिन यह क्या था इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। कुछ लोग इसको एक प्रकार का प्रमेह समझते हैं जिसमें सफ़ेद द्रव्य उत्सर्जित होता है।[4] इसको दस्त भी समझा गया है, यद्यपि यह उचित नहीं जान पड़ता है।[5] निश्चित रूप से यही कहा जा सकता है कि यह एक प्रकार का द्रव्य का उत्सर्जन था। संभवतः यह केवल पुरूषों को ही प्रभावित करता है जो असामान्य था और कुछ समय के लिए जारी रहता था।

आयतें 4-12. *अशुद्धता का परिणाम।* "स्खलन" जो एक पुरूष को अशुद्ध करता है, को परिभाषित करने के पश्चात्, यहोवा ने उससे होने वाले अशुद्धता के परिणाम का विश्लेषण किया है। लगभग जो कुछ भी अशुद्ध पुरूष छुए, चाहे वह निर्जीव हो या सजीव, अशुद्ध हो जाता है और उसको शुद्ध करने की आवश्यकता होती है। पाठ यह भी कहता है जिस पर भी अशुद्ध व्यक्ति लैटता है या फिर बैठता है, जैसे **बिछौने** (15:4) या कोई **सवारी** (15:9), वह **अशुद्ध** हो जाता है। इसलिए, कोई भी यदि उस पर बैठता है, लैटता है या जिस पर वह बैठा था या लेटा था, उसको उठाकर ले जाता है, वह **अशुद्ध** हो जाता है (15:5, 6, 10)। इससे भी बढ़कर, यदि कोई **प्रमेह से ग्रसित** व्यक्ति को छूता था तो वह भी **अशुद्ध** हो जाता था (15:7)। यदि वह किसी पर थूकता था या किसी को छूता था (पहले **अपने हाथों को धोए** बिना), तो वह व्यक्ति या वस्तु भी अशुद्ध ठहरता था (15:8, 11)। यद्यपि, पुरूष के प्रमेह से संबंधित अशुद्धता को आसानी से हटाया जा सकता था। अशुद्ध व्यक्ति को केवल **अपने वस्त्र धो लेना चाहिए था और पानी से स्नान करना था और उसे सांझ तक अशुद्ध रहना था** (15:5-8, 10, 11)।

आयत 12 संभवतः उस पात्र के बारे में बात करता है जो पिछली आयत में धोने के बारे में कहा गया है। **मिट्टी का पात्र** जिससे एक अशुद्ध व्यक्ति अपने आपको को धोता है उसे **तोड़ दिया जाना** चाहिए था (देखें 6:28; 11:33)। इसके पीछे यह विचारधारा था कि खांखर युक्त सामग्री जिससे पात्र बना था अशुद्धता खींच लेता था और उसे धोने से शुद्ध नहीं किया जा सकता था। फिर भी, उसी उद्देश्य के लिए लकड़ी से बने पात्र को धोकर शुद्ध किया जा सकता था ताकि उसका प्रयोग

दोबारा किया जा सके।

असामान्य स्खलन वाले पुरूष का शुद्धिकरण (15:13-15)

13"फिर जिसके प्रमेह हो वह जब अपने रोग से चंगा हो जाए, तब से शुद्ध ठहरने के सात दिन गिन ले, और उनके बीतने पर अपने वस्त्रों को धोकर बहते हुए जल से स्नान करे; तब वह शुद्ध ठहरेगा। 14और आठवें दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सम्मुख जाकर उन्हें याजक को दे। 15तब याजक उनमें से एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि के लिये भेंट चढ़ाए; और याजक उसके लिये उसके प्रमेह के कारण यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे।"

लैव्यव्यवस्था 15:1-12 यह विश्लेषण करता है कि किस प्रकार एक शुद्ध व्यक्ति स्खलन से हुए अशुद्ध व्यक्ति के सम्पर्क में आने से कैसे शुद्ध हो सकता था। यह प्रश्न कि जब एक व्यक्ति स्खलन से शुद्ध हो जाता है तो उसे स्वयं क्या करना चाहिए, इस संबंध में इस अनुच्छेद में चर्चा किया गया है।

आयतें 13-15. परमेश्वर ने स्खलन के कारण अशुद्ध हुए व्यक्ति को धार्मिक रीति रिवाज़ के अनुसार पुनः स्थापित करने के लिए निर्देश जारी किया। इसमें तीन बातें संलग्न थीः

सबसे पहले, उसको **उसके प्रमेह से चंगा होना चाहिए था** (15:13)। दूसरे शब्दों में, उसका "प्रमेह" रुक जाना चाहिए था या फिर उससे उसको चंगा होना चाहिए था।

दूसरी बात, उसके चंगा होने से उसको सात दिन गिनना चाहिए था - संभवतः यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रमेह रुक चुका है। इस समयावधि के अंत में, उसको **अपना वस्त्र धोना था** और **नहाना** था। तब वह **शुद्ध ठहरेगा** (15:13)।

तीसरी बात, अपने शुद्ध होने की अवस्था में यहोवा से आशीष प्राप्त करने के लिए उसको **यहोवा के सम्मुख** आकर **मिलापवाले तम्बू के द्वार** पर **दो** पंडुक या कबूतर के बच्चे भेंट करना था (15:14)। एक **पापबलि** के लिए तो दूसरा **होमबलि** के लिए चढ़ाया जाए। पापबलि के द्वारा वह धार्मिक शुद्धिकरण चाहेगा; होमबलि के द्वारा अपनी चंगाई के प्रति धन्यवाद प्रकट करेगा और यहोवा के प्रति अपने पुनः समर्पण दोहराने की इच्छा प्रकट करेगा। इन बलिदानों को पूरा करने के द्वारा, याजक उसके लिए **यहोवा के सम्मुख प्रायश्चित्त करेगा** (15:15)। स्खलन के कारण हुए शारीरिक अशुद्धि दूर कर दी जाएगी और वह (स्वयं के साथ-साथ छावनी भी) पारंपरिक तरीके से पुनः शुद्ध हो जाएगा।

शुद्धिकरण के ये कार्य ठीक वैसे ही हैं जिस तरह से अध्याय 14 में एक कोढ़ी शुद्ध होता है। इन दोनों में एक अंतर यह है कि कोढ़ या चर्म रोग से ग्रसित व्यक्ति के शुद्धिकरण में दोषबलि (या क्षतिपूर्ति) की आवश्यकता थी (14:12, 21); जबकि असामान्य प्रमेह से शुद्ध होने की स्थिति में इसकी आवश्यकता नहीं था। दूसरी

भिन्नता यह थी कि चंगा हुआ कोढ़ी दरिद्र होने के कारण पापबलि और होमबलि में चढ़ाए जाने वाले दो मेढ़ा के बजाए दो पंडुक या कबूतर के बच्चे भेंट चढ़ा सकता था (14:22); प्रमेह से चंगे हुए व्यक्ति को केवल दो पंडुक या कबूतर के बच्चे चढ़ाने थे (15:14, 15)। ये निर्देश इस विचार धारा का समर्थन करते हैं कि यहोवा की दृष्टि में प्रमेह, "कोढ़" जैसा गम्भीर समस्या नहीं था।

पुरुष का सामान्य वीर्य स्खलन के कारण अशुद्धता (15:16-18)

16"फिर यदि किसी पुरुष का वीर्य स्खलित हो जाए, तो वह अपने सारे शरीर को जल से धोए, और साँझ तक अशुद्ध रहे। 17और जिस किसी वस्त्र या चमड़े पर वह वीर्य पड़े वह जल से धोया जाए, और साँझ तक अशुद्ध रहे। 18जब कोई पुरुष स्त्री से प्रसंग करे, तो वे दोनों जल से स्नान करें, और साँझ तक अशुद्ध रहें।"

दूसरे प्रकार का अशुद्धता पुरुष का सामान्य वीर्य स्खलन के कारण था।

आयतें 16, 17. पुरुष का प्रथम प्रकार का **वीर्य स्खलन** स्त्री के साथ प्रसंग किए बिना था - संभवतः बिना इच्छा के रात्रि में होने वाला स्खलन। ऐसी अवस्था में भी वह अशुद्ध हो जाता है। इस अशुद्धता से शुद्ध होने के लिए **उसको पानी से नहाना चाहिए था**; वह **सांझ तक अशुद्ध ठहरा रहेगा।** जिस **किसी भी वस्त्र** पर उसका वीर्य स्खलित हुआ हो, उसे **धो लिया जाना चाहिए** था और उसी तरह **सांझ तक वह अशुद्ध ठहरा रहेगा।**

आयत 18. दूसरे प्रकार का **वीर्य स्खलन** जिसके कारण पुरुष अशुद्ध हो जाता है वह स्त्री से संबंधित था। यदि **एक पुरुष** और **एक स्त्री** ने प्रसंग किया हो, तो दोनों ही अशुद्ध ठहरते और उन्हें **पानी से स्नान करना था**; वे **सांझ तक अशुद्ध ठहरे रहेंगे।** तब, यह अनुमान लगाया जाता है कि दोनों शुद्ध हो जाएंगे। वारेन डब्ल्यु. वीयर्सबी ने कहा,

> मूसा *पारंपरिक रीति रिवाज़* की अशुद्धता को संबोधित कर रहा है, न कि नैतिक अशुद्धता। चूंकि प्रसंग में शारीरिक स्राव होता है और शारीरिक स्राव एक व्यक्ति को अशुद्ध ठहराता है, तो पति और पत्नी को अपने आपको शुद्ध करने के लिए नहाने का पीड़ा उठाना चाहिए और इस तरह उनको पारंपरिक शुद्धता बनाए रखना चाहिए।[6]

स्त्री की अशुद्धता (15:19-30)

सामान्य ऋतुमती के कारण अशुद्धता (15:19-24)

19"फिर जब कोई स्त्री ऋतुमती रहे, तो वह सात दिन तक अशुद्ध ठहरी रहे, और जो कोई उसको छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे। 20और जब तक वह अशुद्ध रहे तब तक जिस जिस वस्तु पर वह लेटे, और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे सब

अशुद्ध ठहरें। 21और जो कोई उसके बिछौने को छूए वह अपने वस्त्र धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। 22और जो कोई किसी वस्तु को छूए जिस पर वह बैठी हो वह अपने वस्त्र धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। 23और यदि बिछौने या अन्य किसी वस्तु पर जिस पर वह बैठी हो छूने के समय उसका रुधिर लगा हो, तो छूनेहारा साँझ तक अशुद्ध रहे। 24और यदि कोई पुरुष उससे प्रसंग करे, और उसका रुधिर उसके लग जाए, तो वह पुरुष सात दिन तक अशुद्ध रहे, और जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब अशुद्ध ठहरें।"

सबसे पहले 15:18 में स्त्रियों को पुरूषों के साथ संबंध के बारे में इस व्यवस्था से परिचित कराया गया है। 15:19 से प्रारंभ होकर उनके शारीरिक स्राव की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है - सबसे पहले उनके ऋतुमती होने के कारण सामान्य स्राव और उसके पश्चात् कुछ समय तक लहू लगातार बहने के कारण असामान्य स्राव।

आयतें 19-23. इस अनुच्छेद में मुख्यतः स्त्रियों में मासिक धर्म के समय होने वाले लहू बहने के कारणों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। **मासिक धर्म** के अंतर्गत् जब उसका लहू बहना प्रारंभ हो जाता है तो **वह सात दिनों तक अशुद्ध ठहरती है**।

उसके अशुद्धता का परिणाम भी वैसे ही है जैसे पुरूषों में प्रमेह कुछ समय तक रहता है: इस दौरान जो कुछ भी वह छूती है या जो भी उससे छू जाता है वह उसके अशुद्धता से प्रभावित होता है। जो भी **उसको, उसके बिछौने**, या **जिस पर भी** वह बैठी हो, को छूता है, वह अशुद्ध ठहरेगा/गी। फिर से शुद्ध होने के लिए, उस व्यक्ति को **अपने वस्त्र धोना था**, **पानी में नहाना था** और **सांझ तक अशुद्ध ठहरा रहना था**।

आयत 24. यदि कोई पुरूष इस दौरान उस स्त्री के साथ सोता है (उसके साथ प्रसंग करता है), तो वह भी उस स्त्री के साथ **सात दिनों तक** अशुद्ध ठहरा रहे। यदि ऐसा होता है तो जिस पर भी वह लैटता है या फिर बैठता है वह भी **अशुद्ध ठहरे**।

यह व्यवस्था, आज के बाइबल के विद्यार्थियों को बड़ी अजीब सी लगेगी। गॉर्डन जे. वेनहैम ने इसकी अनुभूति और सामाधान की चुनौतियों पर इस प्रकार चर्चा किया:

> आधुनिक विचारकों को प्रथम दृष्टया मासिक धर्म से संबंधित व्यवस्था बड़ी कठोर लगेगी। प्रत्यक्ष रूप से ऐसा लगता है मानो वे इस्राएल के हरेक जवान स्त्री को महीने के एक सप्ताह अस्पृश्यता की अवस्था में रखते हैं। लेकिन ... एक स्त्री के लिए जवान होने से लेकर मासिक धर्म बंद होने तक माह में एक बार इस प्रकार का दुःख उठाना आधुनिक दृष्टिकोण से ठीक जान पड़ता है। यह ऐसा इसलिए नहीं है कि स्त्रियों का शारीरिक संरचना बदल गया है, बल्कि यह आधुनिक पाश्चात्य सामाजिक व्यवहार के कारण है। प्राचीन इस्राएल में विवाहित स्त्रियों में तीन कारक मासिक धर्म को विरल बनाती थी। ये कारक, कम आयु में विवाह ... और देर से दूध छुड़ाना ... और एक बहुत बड़ा परिवार

होना ... । व्यवस्थाविरण 15:19-24 के व्यवस्था से जो स्त्री अछूती रहती थी वे अविवाहित जवान लड़कियाँ थीं।[7]

मासिक धर्म से अधिक दिनों तक लहू बहने के कारण अशुद्धता (15:25-30)

[25]"फिर यदि किसी स्त्री के अपने मासिक धर्म के नियुक्त समय से अधिक दिन तक रुधिर बहता रहे, या उस नियुक्त समय से अधिक समय तक ऋतुमती रहे, तो जब तक वह ऐसी दशा में रहे तब तक वह अशुद्ध ठहरी रहे। [26]उसके ऋतुमती रहने के सब दिनों में जिस जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब उसके मासिक धर्म के बिछौने के समान ठहरें; और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे भी उसके ऋतुमती रहने के दिनों के समान अशुद्ध ठहरें। [27]और जो कोई उन वस्तुओं को छूए वह अशुद्ध ठहरे, इसलिये वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। [28]पर जब वह स्त्री अपने ऋतुमती से शुद्ध हो जाए, तब से वह सात दिन गिन ले, और उन दिनों के बीतने पर वह शुद्ध ठहरे। [29]फिर आठवें दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास जाए। [30]तब याजक एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाए; और याजक उसके लिये उसके मासिक धर्म की अशुद्धता के कारण यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे।"

आयत 25. व्यवस्था का मुख्य विषय जो 15:25 से प्रारंभ होता है वह यह है कि **किसी भी प्रकार का लहू का बहना** जो एक स्त्री के मासिक धर्म की सामान्य लहू प्रवाह से अधिक रहती है वह उसे पारंपरिक रीति रिवाज़ से **अशुद्ध** ठहराती है। कई प्रकार की शारीरिक समस्याएं ऐसी परिस्थिति पैदा कर सकती थी; ये सभी उसको रीति रिवाज़ के अनुसार **अशुद्ध** ठहरा सकती थी। उदाहरण के रूप में, कोई भी उस स्त्री के बारे में सोच सकता है जिसको यीशु ने मरकुस 5:25-34 में चंगा किया था। वह बीस वर्ष से "रक्तस्राव" या "लहू बहने के रोग" (KJV) से ग्रसित थी।

आयतें 26, 27. एक स्त्री का कई दिनों तक रक्तस्राव का परिणाम भी वैसे ही था जैसे कि सामान्य रक्तस्राव में होता था। जबकि वह **अशुद्ध** थी, तो जो भी वह छूती थी, या जो भी उसको छूती थी, वह उसके **अशुद्धता** के कारण सब कुछ अशुद्ध हो जाता था।

एक स्त्री से लगातार रक्तस्राव के कारण अशुद्धता की समस्या का समाधान भी वही था जिस तरह एक पुरूष से लगातार शारीरिक स्खलन की समस्या थाः एक व्यक्ति जो एक स्त्री के रक्तस्राव से अशुद्ध हो जाता था उसको **अपने वस्त्र धोना चाहिए था, पानी से स्नान करना चाहिए था** और **सांझ तक अशुद्ध ठहरे रहना चाहिए था।**

आयतें 28-30. शुद्ध होने के लिए, स्त्री को भी स्वयं, उसी प्रक्रिया से होकर गुजरना था जिस तरह एक पुरूष को असामान्य शारीरिक स्खलन से शुद्ध होने की प्रक्रिया से होकर गुज़रना पड़ता था (15:13-15)। उसको भी तीन प्रकार की प्रक्रिया का पालन करना थाः (1) वह असामान्य **रक्तस्राव** से शुद्ध, या चंगी हो चुकी थी (15:28)। (2) उसके पश्चात् उसको **अपने लिए सात दिन**, संभवतः यह

सुनिश्चित् करने के लिए कि कहीं फिर से बीमारी लौट कर न आ जाए, गिनना था। इस समयावधि के पश्चात् वह **शुद्ध** समझी जाएगी (15:28)। (3) तब उसको उस पुरूष के समान जिसके शरीर से असामान्य स्खलन रुक चुका था, भेंट चढ़ाना थाः **दो** पंडुक या कबूतर के बच्चे, **एक पापबलि के लिए** और **दूसरा होमबलि के लिए** बलिदान करना था (15:29, 30)। इन भेंटों के साथ, वह धार्मिक रीति रिवाज़ शुद्धता प्राप्त करती और धन्यवाद की अभिव्यक्ति प्रकट करती और यहोवा के सम्मुख अपना समर्पण दोहराती थी।

सारांश (15:31-33)

31"इस प्रकार से तुम इस्राएलियों को उनकी अशुद्धता से अलग रखा करो, कहीं ऐसा न हो कि वे यहोवा के निवास को जो उनके बीच में है अशुद्ध करके अपनी अशुद्धता में फँसे हुए मर जाएँ।" 32जिसके प्रमेह हो और जो पुरुष वीर्य स्खलित होने से अशुद्ध हो; 33और जो स्त्री ऋतुमती हो; और क्या पुरुष क्या स्त्री, जिस किसी के धातुरोग हो, और जो पुरुष अशुद्ध स्त्री से प्रसंग करे, इन सभों के लिये यही व्यवस्था है।

जैसे कि लैव्यव्यवस्था के इस भाग में सामान्य है, यह अनुच्छेद एक सारांश वक्तव्य के साथ समाप्त होता है।

आयतें 31-33. इस अध्याय की अंतिम दो आयतें (15:32, 33) यह दोहराती है कि आखिर व्यवस्था किस उद्देश्य से दिया गया थाः वे स्खलन से संबंधित हैं, चाहे वह पुरूष हो या फिर एक स्त्री। यह सारांश इस अध्याय में दोहरायी गई चार परिस्थितियों को स्पष्ट करती है: **एक पुरूष** का **वीर्य स्खलन**; **एक स्त्री** जो **मासिक धर्म** के कारण **अशुद्ध** है; वह व्यक्ति जिसको असामान्य शारीरिक स्खलन है, चाहे वह स्त्री हो या फिर पुरूष; और वह **पुरूष** जो **एक अशुद्ध स्त्री** के साथ प्रसंग करता हो।

यद्यपि, इकतीसवीं आयत यह स्पष्ट करता है कि ये व्यवस्थाएं *क्यों* दी गई थीः ताकि **निवास स्थान** की पवित्रता बनी रहे,[8] जिसकी पहचान परमेश्वर ने अपने निवासस्थान के रूप में दी है। स्पष्ट रूप से, जो व्यवस्था दी गई थी, यदि उसका उचित तरीके से पालन किया जाता तो यह उसको जो शारीरिक स्खलन के कारण अशुद्ध है, उसे परमेश्वर की निवासस्थान को अशुद्ध करने से रोकेगा। यदि कोई अशुद्ध चीज़, उसके साथ जिसका वर्गीकरण पवित्र करके किया गया है, के संपर्क में आए, तो एक गम्भीर पाप हो जाता था और उसके पश्चात् एक पीड़ादायक परिणाम का सामना करना पड़ता था - कभी-कभी इसके लिए मृत्युदण्ड भी दिया जाता था। संभवतः, जिन्होंने पहले-पहले इस शब्द के बारे में सुना होगा उन्होंने इसका विश्लेषण बड़े ही सामान्य तरीके से किया होगा। यदि छावनी में कोई अशुद्ध व्यक्ति था और इन निर्देशों का, जो इस पाठ में पाया जाता है, का पालन किए बिना, छावनी में स्वीकार किया जाता था तो सम्पूर्ण समाज अशुद्ध ठहरती थी।

जिसके परिणाम स्वरूप निवासस्थान प्रभावित होता था। यदि निवासस्थान, अशुद्धता से घिर जाता था तो सम्पूर्ण राष्ट्र नष्ट होने के खतरे में पड़ जाता था।

अध्याय 15 से संबंधित दो अतिरिक्त प्रश्न

इन असामान्य व्यवस्था से संबंधित दो प्रश्न। कुछ पाठकों के लिए, परमेश्वर की व्यवस्था में व्यक्तिगत मामलों का संबोधन, आश्चर्य में डालने वाला है।

किस प्रकार सार्वजानिक व्यवस्था, व्यक्तिगत मामलों को नियंत्रित करती थी?

सार्वजनिक रूप से कोई भी यह प्रश्न पूछ सकता था, "कोई यह कैसे अपेक्षा कर सकता था कि वह इस सार्वजनिक व्यवस्था को माने जबकि ये व्यवस्था तो व्यक्तिगत् परिस्थितियों में लागू होती थी?" विशेषकर, लैव्यव्यवस्था 15 में पाए जाने वाले व्यवस्था को यहोवा, इस्राएलियों को मानने के लिए कैसे बाध्य कर सकता था, जबकि ये व्यवस्था तो लोगों के व्यक्तिगत् जीवन से संबंधित था? शुद्ध और अशुद्ध जानवरों से संबंधित प्रश्न चरित्र से संबंधित था जो कोई भी देख सकता था। जब एक शिशु का जन्म (अध्याय 12 का विषयवस्तु) होता था, तो इस तथ्य को कोई गुप्त नहीं रख सकता था। कोढ़ की समस्या (अध्याय 13 और 14) किसी व्यक्ति के बाहरी रंग रूप, वस्त्र या घर से संबंधित था।

इसके विपरीत, एक पुरूष या एक स्त्री दूसरे के जाने बिना शारीरिक स्खलन के कारण अशुद्ध हो सकते थे; और ऐसी परिस्थिति में, वह दूसरे वस्तुओं और लोगों को अशुद्ध कर सकते थे। कोई यह कैसे जानेगा कि कोई अध्याय 15 में वर्णित कारणों से कोई अशुद्ध है? उदाहरण के लिए, कोई क्यों सार्वजनिक रूप से लज्जाजनक बीमारी के बारे में अंगीकार करेगा/गी और अंततः जब वह ठीक जाए तो उसके लिए भेंट चढ़ाए? इस प्रश्न के कई संभावित उत्तर हैं।

जंगल में प्राचीन इस्राएलियों का जीवन आज के लोगों के जीवन से भिन्न था। उदाहरण के लिए, अमरीका के लोग निजता को महत्व देते हैं। दूसरे लोगों के जाने बिना, उनको हर प्रकार की समस्या हो सकती है। इस्राएलियों की छावनी में निजता की न तो मूल्य था और न ही इसकी कोई संभावना थी। कोई भी यदि अपनी लैंगिक समस्या को गुप्त रखना चाहे, तौभी ऐसा करने की संभावना नहीं था।

दूसरी संभावना यह है कि असामान्य स्राव ने उन लोगों को चेताया होगा जो उनसे प्रभावित हुए होंगे, ताकि वे याजकों के पास जाएं, जो इस्राएलियों के लिए वैद्य और स्वास्थ्य कर्मी थे। सहायता या सलाह प्राप्त करने के लिए, उन्होंने, यदि दूसरों को न भी कहा हो तौभी उन्होंने अपनी व्यक्तिगत् समस्याओं को याजकों को बताया होगा; और तब याजक ने उनको अध्याय 15 में लिखे व्यवस्था पालन करने के लिए कहा होगा।

तीसरी संभावना यह है कि इस्राएलियों को यह बताया गया था कि इन व्यवस्थाओं को पालन करने के लिए या अपनाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए

था। चाहे दूसरे उनके व्यक्तिगत् समस्या से अवगत् हों या न हों, जब वे वर्णित शारीरिक स्राव से ग्रसित हुए तो उन्होंने यहोवा के निर्देशों का अनुकरण किया।

किसी के अस्वच्छता के संदर्भ में, अच्छी स्वच्छता के दृष्टिकोण से आज जो किया जाता है, वैसे ही तभी भी किया गया होगा। किसी भी व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ हाथ मिलाना असामान्य नहीं है, लेकिन यदि दूसरा व्यक्ति हाथ मिलाने से इनकार करे और कुछ इस प्रकार कहेः "मैं एक प्रकार के संक्रमण से ठीक हो रहा/ही हूँ और मैं नहीं चाहता/ती कि आपको भी यह संक्रमण लगे।" जो व्यक्ति दूसरों को संक्रमण से बचाने का प्रयास करता है वह यह मानता है कि उसे कीटाणु नहीं फैलाना चाहिए और दूसरों को संक्रमित नहीं करना चाहिए। उसी तरह, कोई भी यह कल्पना कर सकता है कि एक इस्राएली पुरूष या स्त्री अपने मित्र या परिवार के सदस्यों से कहता/ती है, "यहाँ मत बैठो। मैं यहाँ बैठा/ठी था/थी, और अभी मैं अशुद्ध हूँ। आप वहाँ बैठ सकते हैं।" उसे ऐसा क्यों करना था? ऐसा वह परमेश्वर की व्यवस्था में उसका अटूट विश्वास और इस निश्चय के साथ कि वह किसी अन्य व्यक्ति को अशुद्ध नहीं करेगा/गी के कारण करता/ती था/थी।

यहोवा ने हरेक व्यक्ति विशेष को उसका संदेश गम्भीरता से लेने के अच्छे कारण बताए। उसने कहा कि लोगों को नियम पालन करना चाहिए ताकि वे "अपने अशुद्धता में फंसे हुए न मर जाए" (15:31)। इस प्रकार के वक्तव्य ने हरेक इस्राएली को परमेश्वर की व्यवस्था को गम्भीरतापूर्वक मानने के लिए उत्साहित किया होगा, चाहे इसमें किसी को उसके अशुद्धता का ज्ञान हो या न हो।

क्यों परमेश्वर इन स्खलनों को "अशुद्धता" के श्रेणी में रखता है?

दूसरा प्रश्न - "क्यों परमेश्वर ने इन स्खलनों को अशुद्ध ठहराया?" - का उत्तर विभिन्न प्रकार से दिया जा सकता है। हमें स्मरण रखना होगा कि इनमें से कोई भी व्यवस्था पति और पत्नी के बीच लैंगिक क्रिया को गलत या पापमय नहीं ठहराता है।

आदि में, मनुष्य के पतन से पहले, "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, ... नर और नारी ... "; और उसने उन्हें यह आदेश दिया, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ" (उत्पत्ति 1:27, 28)। यौन क्रिया और बच्चों का पैदा होना, परमेश्वर के योजना में आरंभ से था (हालांकि पाप के कारण बच्चा पैदा होने के समय प्रसव पीड़ा जोड़ दी गई थी; उत्पत्ति 3:16)।

नये नियम में अभिषिक्त लेखकों ने विवाह के द्वारा लैंगिक क्रिया को मान्यता दी (देखें 1 कुरिं. 7)। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा, "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह-बिछौना निष्कलंक रहे" (इब्रा. 13:4; KJV)।

कि परमेश्वर ने लैव्यव्यवस्था 15 में लैंगिक क्रिया को "अशुद्धता" की श्रेणी में क्यों रखा, का कोई सारांश निकालने का प्रयास करता है तो उसको यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि परमेश्वर लैंगिक क्रिया को अशुद्ध ठहराता है। जब एक पति और पत्नी प्रसंग करते हैं तो बाइबल इसको कभी भी अशुद्ध या पापमय नहीं बताता है।

तो क्यों परमेश्वर ने यह कहने के लिए नियम दिए कि एक पुरूष या स्त्री के "शरीर" से "स्खलन" उसे "अशुद्ध" ठहराता है? रॉय गेन ने प्रस्ताव रखा कि मनुष्य का मरणहार देह से संबंध होने से स्खलन के कारण अशुद्धता होती है, जो उसके पतन का परिणाम है (उत्पत्ति 3)। लैव्यव्यवस्था 15:16-24 में स्खलन के बारे में जो कहा गया है वह प्रजनन की प्रक्रिया से संबंधित है। एक पुरूष और स्त्री का सामान्य स्खलन एक नये जीवन का निर्माण करता है। फिर भी, यह जीवन मरणहार है। इसलिए, जैसे परमेश्वर की पवित्रता में दिखाई देता है, मनुष्य की मरणहार स्थिति (जैसे दो स्खलन से दर्शाया गया है) की घोषणा की तुलना अशुद्धता से करके उसने अपनी अतुलनीय अमरत्व पर अधिक जोर दिया है। यह अशुद्धता धार्मिक रीति रिवाज़ वाली अशुद्धता (न कि नैतिक पाप) था और इसमें क्षतिपूर्ति की बहुत कम मांग की गई थी; यह तथ्य यह दर्शाता है कि परमेश्वर मनुष्य की मरणहार स्थिति को पाप के भांति या फिर एक दुःख भरा गलती के रूप में नहीं देखता है।[9]

एक विस्तृत चर्चा में, वेनहैम ने विभिन्न मतों का विश्लेषण किया है कि क्यों लैव्यव्यवस्था 15 में पुरूष और स्त्री के स्खलन को "अशुद्धता" से संबंधित किया गया है। उसके मतों की सूची निम्नलिखित है:

1. अध्याय 15 में पाये जाने वाले व्यवस्था के पीछे केवल स्वास्थ्य कारण है।
2. लैंगिक संबंध दुष्ट की शक्तियों से संबंधित था (यद्यपि इस पाठ में इस प्रकार का मत न्यायसंगत नहीं है)।
3. यहाँ पाए जाने वाले व्यवस्था के कारणों का विश्लेषण करने के प्रयासों के बजाए, किसी ने केवल यह कहा है कि यहूदी मत के अलावा प्राचीन धर्मों में भी ऐसी ही व्यवस्था थी।
4. ये शारीरिक स्खलन पाप और मृत्यु के प्रतीक थे। इसलिए, इस व्यवस्था का उद्देश्य मनुष्यों को स्मरण दिलाना था कि वे पापी हैं और पाप उनके आंतरिक और व्यक्तिगत् कार्यों को भी प्रभावित करता है।
5. ये व्यवस्थाएं इस्राएल के पवित्रता पर जोर डालती है और यह परमेश्वर के लोगों को दूसरों से भिन्न होने में सहायता करता है।
6. जबकि पवित्रता सिद्धता के तुल्य है और सारा दोष अशुद्धता का कारण है, शारीरिक स्खलन इस्राएलियों को अशुद्ध ठहराता है और उन्हें पवित्र निवासस्थान की सेवाओं में भाग लेने से अयोग्य घोषित करता है। इसलिए ये व्यवस्थाएं इस्राएल के इर्द गिर्द के देशों में उनके प्रतिष्ठा का प्रतीक था और "उन्हें कनानियों के संग अंतर्विवाह करने से रोकती थी और विदेशी रीति रिवाज़ और धर्म मानने से रोकती थी, जो इस्राएल की विशिष्ट स्थिति, चुने हुओं और पवित्र राष्ट्र का परस्पर विरोधी था।"
7. सर्वोत्तम उत्तर यह हो सकता है कि अशुद्धता से संबंधित व्यवस्था के द्वारा नैतिकता को उत्साहित करना था। विशेषकर, वे "लैंगिक व्यवहार को नियंत्रित" करने को उत्साहित करते थे। इसके साथ ही यदि वे आज्ञाकारी

रहे तो इसके द्वारा इस्राएल के बीच से वेश्यावृति और ऊर्वरता संप्रदाय, जो मूर्तिपूजकों के बीच बहुतायत से पाया जाता था, को हटाना था और वे साधारण वेश्यावृति को उत्साहित नहीं करते थे।[10]

मतों की यह विविधता संभव है क्योंकि पाठ अपने आपमें इन व्यवस्थाओं का कारण नहीं बताती है, यह केवल इस बात पर जोर देती है कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए ये माने जाने चाहिए ताकि उसके क्रोध से बचा जा सके (देखें 15:31-33)। जबकि इस सिद्धांत में कुछ दम तो है, संभवतः जैसे पहले भी सुझाव प्रस्तुत किया गया है कि इस प्रश्न का सामाधान करने का सबसे सरल तरीका यह है कि इससे जुड़ा "अशुद्धता," धार्मिक रीति रिवाज़ के दृष्टिकोण से असामान्य और अप्राकृतिक है। कुछ चीजें जो *अक्षरशः* "अशुद्ध" नहीं थीं (जैसे पूरे दिन खेतों में कार्य करने के कारण गंदे हाथ या पांव या धूल भरी सड़कों में चलने के कारण) वे *धार्मिक रीति* रिवाज़ के अनुसार अशुद्ध नहीं थे क्योंकि वे तो सामान्य समझे जाते थे। इसके विपरीत, लोगों और वस्तुओं में कोढ़ दिखाई देना असामान्य था। प्रतिदिन शिशु पैदा नहीं होते थे; यह भिन्न था।

उसी तरह, शारीरिक स्खलन जिसके कारण लोग अशुद्ध होते थे, परिभाषानुसार, सामान्य स्थिति से हटकर था। यदि वे लगातार निश्चित अंतराल में प्रकट होते तो कोई इस पर ध्यान नहीं देता। बल्कि, वे, असामान्य थे, और इस दृष्टिकोण से असामान्य थे।[11] इसलिए, शुद्धता/अशुद्धता के सिद्धांतों का ध्यान रखते हुए, उनको "अशुद्धता" की श्रेणी में रखा जाना चाहिए था।

इस न्याय से किसी इस्राएली को, जिस पर वह लागू होता, चकित, कलंकित, या निराश नहीं होना चाहिए था। परमेश्वर के लोग यह जानते थे कि "अशुद्ध" कहलाना "पापी" कहलाने के तुल्य नहीं था। वे जानते थे कि अपनी कोई भी गलती न होने पर भी वे अशुद्ध हो सकते थे। वे इस बात से भी अवगत थे कि यही समझ सब के पास भी थी। सामान्यतः, "अशुद्ध" कहलाए जाने के परिणाम कुछ विशेष भारी नहीं होते थे। इसलिए इसमें संदेह है कि शारीरिक प्रमेह के कारण "अशुद्ध" कहलाने के साथ कोई लज्जा भी जुड़ जाती थी।

इसके अतिरिक्त, इस्राएल के लिए इस शुद्ध/अशुद्ध पद्धति में कुछ लाभ भी थे। धर्मज्ञान के परिपेक्ष में, इन नियमों के पालन करने से इन नियमों को देने वाला परमेश्वर प्रसन्न होता था, और परमेश्वर के निवास-स्थान एवं परमेश्वर की प्रजा की पवित्रता भी बनी रहती थी। धार्मिक और नैतिक दृष्टिकोण से, ये नियम ऐसे यौन आचरण को प्रोत्साहित करते थे जो परमेश्वर की नैतिक आवश्यकताओं के साथ मेल खाता था। व्यावहारिक दृष्टिकोण से, यह व्यवस्था परमेश्वर के लोगों के लिए एक स्वस्थ पर्यावरण बनाने में सहायता करती थी।

अनुप्रयोग

यौन संबंध में बाइबल की शिक्षा (अध्याय 15)

लैव्यव्यवस्था 15 में मानवीय यौन आचरण से संबंधित आज्ञाएँ हैं। क्योंकि हम नई वाचा के अंतर्गत रहते हैं, पुरानी के नहीं, इसलिए यहाँ पाए जाने वाले नियम (लैव्यव्यवस्था के अन्य नियमों के समान) केवल इस्राएलियों के लिए थे और आज हम पर लागू नहीं हैं। परन्तु ये नियम हमें यह पूछने के लिए उकसा सकते हैं कि यौन के विषय में बाइबल क्या कहती है।

हम यह विचार रख सकते हैं कि आज यौन के विषय में परमेश्वर के पास जो हमारे लिए बात है वह है "न करना!" यौन के विषय में जब बात आती है तो प्रचारक और शिक्षक इतना अधिक समय नकारात्मक पर व्यतीत करते हैं - परमेश्वर किन बातों की अनुमति नहीं देता है - कि हमें ऐसा लगता है मानो इस विषय पर नए नियम में कोई सकारात्मक बात है ही नहीं। यदि हम इस बात पर विश्वास रखते हैं, तो हम नए नियम को जैसा हमें जानना चाहिए वैसा नहीं जानते हैं।

नकारात्मक। अवश्य ही, नए नियम में, यौन के विषय में नकारात्मक शिक्षाएँ हैं; वह कुछ ऐसी बातों को वर्जित करता है जिन्हें हमें सुनना, विश्वास करना, और उनके आज्ञाकारी होना चाहिए। यह सिखाता है कि व्यभिचार और परस्त्रीगमन पापमय हैं (1 कुरि. 6:15, 18; गला. 5:19; इफि. 5:3; इब्रा. 13:4), और समलैंगिकता गलत है (रोमियों 1:26, 27; 1 कुरि. 6:9-11)। वह यह भी सिखाता है कि कामवासना से भरे विचार गलत हैं (मत्ती 5:27, 28; कुलु. 3:5; याकूब 1:14, 15)। वास्तव में, वह घोषणा करता है कि जो इन बातों के दोषी हैं उन्हें नरक के दण्ड की आशा रखनी चाहिए जब तक कि वे पश्चाताप नहीं कर लेते हैं (गला. 5:21; प्रका. 21:8)।

हम सरलता से ऐसे कथन कहते हैं और फिर उनके बारे में भूल जाते हैं। हम ऐसे समय में रहते हैं जब व्यभिचार बहुत सामान्य बात है, बिना विवाह किए साथ रहने वाले युगल जोड़ों को किसी लज्जा का सामना नहीं करना पड़ता है, और संभवतः अमरीका में जन्म लेने वाले शिशुओं में से आधे विवाह के बाहर जन्म लेते हैं। यह दावा किया गया है कि आधे विवाहों का अन्त तलाक होता है - इनमें से कई तलाक, चाहे पुरुष द्वारा, चाहे स्त्री द्वारा, व्यभिचार करने के कारण होते हैं। अश्लीलता की भरमार है, और असामान्य यौन संबंधों की पुस्तकें और फ़िल्में मनोरंजन व्यवसाय से संबंधित लोगों के लिए बहुत धन कमाते हैं। इस विकृति के साथ, अब समलैंगिकता को बहुत से लोगों द्वारा "वैकल्पिक जीवनशैली" माना जाता है। ऐसे समय में, मसीही विश्वासियों को पापमय यौन व्यवहार के विरुद्ध बोलना चाहिए। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि मसीहियों को धार्मिक जीवन जीने चाहिए और ऐसे व्यवहार से बच कर रहने के द्वारा अच्छे उदाहरण स्थापित करने चाहिए।

सकारात्मक। परन्तु नई वाचा में यौन के संबंध में केवल ये नकारात्मक शिक्षाएँ

ही नहीं हैं। नए नियम में इस विषय पर सकारात्मक शिक्षाएँ भी हैं।

परमेश्वर ने यौन संबंधों को बनाया और उन्हें विवाह का महत्वपूर्ण भाग ठहराया। जब यीशु से तलाक के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने उत्पत्ति की पुस्तक से उदधृत किया और कहा, "'कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग हो कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?'... सो व अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं। ..." (मत्ती 19:5, 6)। यह खण्ड विवाह को परमेश्वर द्वारा बनाया गया और उसके द्वारा पुरुष तथा स्त्री के साथ होने को "एक होना" किया गया दिखाता है। वाक्याँश "वे दोनों एक तन होंगे" यह संकेत करता है कि विवाह में यौन संबंध दो को एक करने का निर्णायक माध्यम है, और उनके "एक हो जाने" के चिन्ह का भी कार्य करता है।

परमेश्वर ने यौन संबंधों को प्रजनन के लिए बनाया। इससे मानवजाति की बढ़ोतरी होती है। यदि कोई यह प्रस्ताव स्वीकार करता है कि परमेश्वर ने पुरुष और महिला को बनाया और उन्हें यौन व्यवहार रखने वाले जन बनाया, तो उसे यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि यौन संबंधों से संबंधित सभी शारीरिक तथा भावनात्मक व्यवहार को, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, परमेश्वर ने ही उनमें डाला है। उदाहरण के लिए, पुरुषों और महिलाओं में जो यौन इच्छाएं होती हैं, वे बुरी नहीं हैं। ऐसी इच्छाओं के अभाव में, मानव जाति की निरन्तरता ही नहीं रहेगी! परमेश्वर ने मनुष्यों को प्रजनन के लिए बनाया है। जब एक पति और पत्नी इस उद्देश्य को पूरा करते हैं, अद्भुत और विस्मित कर देने वाला तथ्य यह है कि नए जीवन के सृजन में वे परमेश्वर के साथ सहयोग करते हैं!

हमें इस तर्क पर अपने आप को स्मरण कराना चाहिए कि यौन क्रिया को विवाह बन्धन के अन्तर्गत ही व्यवहार में लाना था। परमेश्वर की योजना थी कि पति और पत्नी प्रजनन के कार्य में सक्रिय होंगे, और जो सन्तान उत्पन्न होगी वह पिता की अगुवाई में, माता सहित बनाए गए परिवार में होगी। यौन व्यवहार का उद्देश्य जाति की बढ़ोतरी था, परन्तु यह बढ़ोतरी पारिवारिक इकाई के अन्तर्गत होनी थी।

परमेश्वर ने यौन संबंधों को दोनों साथियों की संतुष्टि के लिए भी बनाया है। विवाह के अन्तर्गत यौन संबंधों का उद्देश्य दोनों व्यक्तियों को संतुष्टि प्रदान करना भी था। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 7 में यह स्पष्ट किया कि पति और पत्नी दोनों को अपने साथी को यौन व्यवहार में संतुष्टि प्रदान करने पर ध्यान देना है।

कुछ ने यौन संबंधों को जाति की बढ़ोतरी के लिए आवश्यक तो माना है, परन्तु एक आवश्यक बुराई के रूप में। अनेकों धार्मिक अगुवों का यह निष्कर्ष रहा है कि बच्चे के जन्म के उद्देश्य के बिना यौन संबंध रखना विवाहित जोड़ियों के लिए पापमय है। बाइबल में ऐसी कोई शिक्षा नहीं है। निःसंदेह, परमेश्वर ने यौन संबंधों को प्रजनन के उद्देश्य के साथ बनाया है, परन्तु साथ ही उसका उद्देश्य इसके द्वारा पति और पत्नी के मध्य परस्पर संतुष्टि, मेल के बन्धन, और प्रेम का अनुभव प्रदान करना भी है।

उपसंहार। हमें यह निश्चित करना चाहिए कि हम यौन संबंधों को वैसे ही देखें

जैसे बाइबल उन्हें देखती है: परमेश्वर द्वारा विवाह का भाग होने के लिए बनाई गई क्रिया, जहाँ वह विवाह को परिभाषित करने वाले चिन्ह और एकता का कारण है। इसका उद्देश्य न केवल मानव जाति की निरन्तरता को बनाए रखना है, परन्तु पति और पत्नी को बहुत संतुष्टि प्रदान करना भी है। यौन व्यवहार के संबंध में बाइबल केवल "नहीं करो!" ही नहीं कहती है; विवाह के अन्तर्गत वह कहती है, "हाँ करो!" पति और पत्नी को यह आशीष प्रदान की गई है कि वे परमेश्वर द्वारा दी गई इस सार्थक और आनन्ददायक क्रिया में भाग लें।

अशुद्धता से मुक्त (अध्याय 11-15)

लैव्यव्यवस्था में, और मूसा की व्यवस्था में, पाए जाने वाले सबसे विचित्र नियमों में शुद्धता और अशुद्धता से संबंधित नियम हैं। ये नियम लैव्यव्यवस्था 11-15 के प्रमुख भाग हैं; और ये पुस्तक के अन्य स्थानों पर भी पाए जाते हैं, तथा पेंटाट्यूक के अन्य भागों में भी। वास्तव में, NASB में शब्द "शुद्ध" लैव्यव्यवस्था में 46 बार, और शब्द "अशुद्ध" 116 बार पाया जाता है।

आज के संदर्भ में ये नियम कितने विचित्र प्रतीत होते हैं, इसके चित्रण के लिए कोई व्यक्ति इस बारे में सोच सकता है कि यदि उसके घर में कम्बल पर एक मरा हुआ चूहा पड़ा मिले तो वह क्या करेगा। संभवतः वह किसी कपड़े या दस्तानों की सहायता से, जिससे वह उसे छूने न पाए, उसे उठाकर कूड़े में फेंक देगा। वह अपने हाथों को अच्छे से धोएगा, और उस कम्बल की भी अच्छे से सफाई करेगा, और फिर जो कुछ भी वह कर रहा था उस पर लौट जाएगा और इस बात को भूल जाने का प्रयास करेगा।

इसकी तुलना में, मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत रह रहे इस्राएली द्वारा क्या किया जाता यदि उसे कम्बल पर मरा हुआ चूहा मिलता? वह भी उसे उठा कर फेंक देता। फिर इसके बाद क्या? लैव्यव्यवस्था 11:29-35 के अनुसार, यदि वह चूहे की लोथ को छू लेता, तो वह "संध्या तक अशुद्ध रहता।" साथ ही मरे हुए चूहे ने जो कुछ भी छूआ होता वह भी अशुद्ध होता। इसके अतिरिक्त चूहे द्वारा छूआ हुआ वह कम्बल अशुद्ध होता और संभवतः उसे नष्ट करना पड़ता।

इस प्रकार के नियम हमें आनन्दित करते हैं कि हम मूसा की व्यवस्था के नियमों के अन्तर्गत नहीं वरन मसीह के नियमों के अन्तर्गत रहते हैं। परन्तु यह हमारी जिज्ञासा को जागृत कर सकते हैं। मूसा के अन्तर्गत, अशुद्धता को नियंत्रित करने वाले नियम क्या थे? वे क्यों दिए गए और उनमें क्या सम्मिलित था? इन नियमों का आज हमारे लिए क्या महत्व है? हम इन प्रश्नों पर विचार करेंगे।

अशुद्धता के नियमों की क्या आवश्यकताएं थीं?

हम एक ही पाठ में इन नियमों के तत्व को तो नहीं दे सकते हैं। परन्तु जो हम कर सकते हैं वह है अशुद्धता से संबंधित मूसा की व्यवस्था के कुछ नियमों का

परिचय देना।

अध्याय 11 कुछ जंतुओं के शुद्ध होने और कुछ के अशुद्ध होने के विषय में बताता है। शुद्ध पशु वे थे जिनके खुर फटे हुए थे, जो पागुर करते थे जैसे कि गाय बैल, भेड़, और बकरी। अन्य सभी पशु अशुद्ध थे। उदाहरण के लिए सूअर अशुद्ध थे क्योंकि चाहे उनके फटे खुर थे, परन्तु वे पागुर नहीं करते थे। शुद्ध और अशुद्ध जल-जन्तुओं में भी भिन्नता की गई थी। शुद्ध जल-जन्तु वे थे जिनके पंख और चोंयेटे थे। अन्य सभी जल-जन्तु अशुद्ध थे। इस अध्याय में कुछ ऐसे पक्षियों की सूची भी है जो अशुद्ध थीं; संभाव्यता, जितनी सूची में नहीं थीं वे शुद्ध मानी गई थीं। इसके अतिरिक्त, शुद्ध और अशुद्ध कीड़ों में भिन्नता की गई। अधिकांश कीड़े अशुद्ध थे, परन्तु कुछ शुद्ध थे और खाए जा सकते थे। विशेषतया, लेखा कहता है कि, "टिड्डी," "फनगे," "झिंगुर," और "टिड्डे" शुद्ध थे तथा खाए जा सकते थे (11:21, 22)। इनके अतिरिक्त, यह परिच्छेद "रेंगने वाले" जीवों (जैसे कि "नेवला," "चूहा," "गोह," "मगर") के बारे में कहता है, जिन्हें अशुद्ध माना जाना था (11:29, 30)।

अशुद्ध जन्तुओं को स्पर्श करने से अशुद्ध हो जाते थे, जैसे कि चूहे वाले उदाहरण में दिया गया है, परन्तु परिच्छेद का प्राथमिक बिंदु है कि परमेश्वर के लोगों को अशुद्ध की सूची के जन्तुओं में से कुछ भी नहीं खाना था। उन्हें केवल शुद्ध जन्तुओं को ही खाना था (11:46, 47)।

ये निर्देश भोजन संबंधी नियमों का, जो इस्राएल के इतिहास में अति महत्वपूर्ण बन गए, आधार थे। इस्राएली (यहूदी), उस समय के बाद से, भोजन संबंधी इन नियमों का कड़ाई से पालन करने के कारण, अन्य सभी लोगों से भिन्न हो गए थे।

अध्याय 12 बच्चे के जन्म के विषय में बताता है। जब एक स्त्री बच्चे को जन्म देती थी, तो वह एक समय तक - सात दिन तक यदि बेटा होता था, या चौदह दिन यदि बेटी होती थी, अशुद्ध हो जाती थी। फिर इसके बाद, इससे पहले कि वह शुद्ध स्वीकार की जाती, उसे समय की एक अन्य सीमा जिसे "शुद्ध हो जाने के दिन" कहा गया है, तक के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

अध्याय 13 और 14 "कोढ़" के विषय में हैं। संभाव्यता, जिस रोग (या रोगों) की यहाँ चर्चा की गई है वह उस तक सीमित नहीं थे जिसे हम आज "कोढ़" जानते हैं। वरन, नियम किसी भी प्रकार के चर्म-रोग या संक्रमण के विषय में थे। यह परिच्छेद इस सामान्य विषय के बारे में है, जिससे सुझाव मिलता है कि किसी भी प्रकार का चर्म-रोग व्यक्ति को अशुद्ध कर देता था।

अध्याय 13 में, विस्तार से बताया गया है कि यदि किसी को चर्म रोग का लक्षण दिखाई पड़े तो क्या करना चाहिए। उसे याजक के पास लाया जाना था, और तब याजक का दायित्व था कि रोग का निदान करे। इस निदान में उसकी सहायता करने के लिए याजक को विस्तृत निर्देश दिए गए थे। सामान्यतः याजक निर्णय करता था कि किसी के चर्म पर कोई दाग "कोढ़" है कि नहीं; यदि है, तो चर्म व्याधि वाले व्यक्ति को सात दिन के लिए अकेला कर दिया जाता था। इसके बाद वह फिर याजक के पास लौट कर आता था, और याजक पुनः उसकी जाँच करता था। यदि चर्म की व्याधि चली गई होती थी तो वह उसे शुद्ध घोषित कर

देता था। यदि नहीं, यदि वह फैल गई या और बिगड़ गई होती थी, तो अन्ततः उसे छावनी के बाहर रहना होता था। व्यवस्था कहती थी,

> जिसमें वह व्याधि हो उस कोढ़ी के वस्त्र फटे और सिर के बाल बिखरे रहें, और वह अपने ऊपर वाले होंठ को ढांपे हुए अशुद्ध, अशुद्ध पुकारा करे। जितने दिन तक वह व्याधि उस में रहे उतने दिन तक वह तो अशुद्ध रहेगा; और वह अशुद्ध ठहरा रहे; इसलिये वह अकेला रहा करे, उसका निवास स्थान छावनी के बाहर हो (13:45, 46)।

इन दो अध्यायों में वस्त्रों में "कोढ़ की व्याधि" के निर्देश भी दिए गए हैं। यदि किसी वस्त्र में ऐसे दाग हों, तो उसे सात दिनों के लिए अलग करना होता था। इसके बाद भी, यदि दाग बना रहता या फैल जाता, तो उस वस्त्र को जला देना होता था। निर्देश भवनों में "कोढ़ की व्याधि" के बारे में भी हैं - संभवतः भवन जो फफूंदी या भुकड़ी से संक्रमित हो। उस भवन को पृथक कर देना था; वे पत्थर जिनमें "कोढ़" पाया जाता, उन्हें निकाल कर उनके स्थान पर दूसरे लगाए जाते। यदि समस्या का कोई समाधान नहीं निकलता, तो वह भवन अशुद्ध घोषित किया जाता और उसे गिरा दिया जाता था।

अध्याय 15 में पुरुष और स्त्रियों के शरीरों से निकलने वाले स्रावों के विषय में निर्देश दिए गए हैं। ये स्राव लोगों को अशुद्ध करते थे, और उनके शरीर जो कुछ भी स्पर्श करते वह अशुद्ध हो जाता।

संक्षेप में, शुद्धता व्यक्ति की सामान्य और वांछित दशा थी। इन पाँच अध्यायों के संक्षिप्त अवलोकन से हमें "अशुद्ध" होने के महत्व की समझ प्राप्त हो जानी चाहिए। कुछ पशु, कुछ जल-जंतु, कुछ पक्षी, कुछ कीड़े, कुछ "रेंगने वाले" अशुद्ध थे। स्त्रियाँ जब वे बच्चे जनती थीं तो अशुद्ध हो जाती थीं। चर्म व्याधियाँ या संक्रमण लोगों को अशुद्ध कर देते थे। वस्त्र जो चर्म की व्याधि के समान प्रतीत होने वाली व्याधि से ग्रसित होते थे वे अशुद्ध माने जाते थे, और भवन भी अशुद्ध हो सकते थे। शारीरिक स्रावों से ग्रसित पुरुष और स्त्रियाँ अशुद्ध थे।

अशुद्धता के लक्षण क्या थे?

1. अशुद्धता का एक अनोखा लक्षण है कि वह "संक्रामक" है, छूत के रोगों के समान। शुद्धता संक्रामक नहीं थी, परन्तु अशुद्धता थी। यदि कोई स्वस्थ मनुष्य किसी रोगी के पास मिलने जाता तो उसके स्वास्थ्य से रोगी चंगा नहीं हो जाता था। परन्तु किसी संक्रामक रोग का रोगी यदि किसी स्वस्थ मनुष्य के पास जाता, तो उससे रोग के फैलने की संभावना होती थी। जिस प्रकार जीवाणु अन्य लोगों तक फैलते हैं, एक मृतक अशुद्ध पशु जिस किसी को छू लेता उन सब को अशुद्ध कर देता। शरीर का अशुद्ध स्राव हर उस वस्तु को अशुद्ध कर देता जिसके वह संपर्क में आता, और फिर जो कोई उस वस्तु को छूता, वह भी अशुद्ध हो जाता।
2. कुछ श्रेणी के जंतु अशुद्ध थे, परन्तु कोई भी मानव वर्ग स्पष्टतया अशुद्ध

नहीं थे। एक समय भारत में व्यक्तियों का एक वर्ग था जिन्हें "नीच" या "अछूत" कहा जाता था। वे किसी जाति के नहीं होते थे और समाज के सब लोग उन्हें दूर रखते थे। बाइबल के पारिभाषिक शब्दों में उन्हें "अशुद्ध" कहा जा सकता था। मूसा की व्यवस्था में इस वर्ग के कोई मनुष्य नहीं थे। यद्यपि अपरिवर्तित अन्यजाति व्यक्ति के साथ विवाह वर्जित था, अन्यजातियों के साथ संपर्क वर्जित नहीं था। यीशु के समय के कुछ यहूदियों ने व्यवस्था को गलत समझा और यह माना कि वह अन्यजाति व्यक्तियों से संपर्क वर्जित करती है क्योंकि वे, प्रभावी रूप से, अशुद्ध थे (देखिए प्रेरितों 10:28); परन्तु मूसा की व्यवस्था इस विचार को नहीं सिखाती थी।

3. अशुद्धता पापी होना नहीं थी, वरन औपचारिक अस्वच्छता थी। पुराना नियम अशुद्ध होने को पापी होने के तुल्य नहीं ठहराता है। एक इस्राएली स्त्री जिसने बच्चा जना हो वह अशुद्ध मानी जाती थी, परन्तु बच्चा जनने में कुछ पापमय नहीं था। ये नियम चरित्र अथवा नैतिक पवित्रता के विषय में नहीं थे; वे औपचारिक या विधिगत पवित्रता के विषय में थे।

इन नियमों की, जो शुद्धता और अशुद्धता के विषय में थे, तुलना किसी संघ या सामाजिक संगठन के नियमों से की जा सकती है। ऐसे समूहों की आयोजित सभाओं में, अपने सदस्यों के द्वारा पालन करने के लिए सामान्यतः कुछ नियम होते हैं। उन्हें उन सभाओं में विशेष प्रकार की टोपी या वर्दी पहननी होती है, विशेष रीति से हाथ मिलाने के द्वारा एक दूसरे का अभिनंदन करना होता है, या सदस्यों को विशिष्ट रीति से ही संबोधित करना होता है। इन पारंपरिक आवश्यकताओं को न मानने को पाप तो नहीं कहेंगे, परन्तु उसके परिणाम अवश्य होंगे। उदाहरण के लिए, नियमों का उल्लंघन करने वालों को एक विशेष निर्धारित स्थान पर बैठना होता था। एक प्रकार से इस व्यक्ति के साथ, समूह के नियमों का उल्लंघन करने के कारण, "अशुद्ध" के समान व्यवहार किया जाएगा, परन्तु उसने किसी चरित्र अथवा नैतिकता संबंधी नियम का उल्लंघन नहीं किया होगा।

इसी प्रकार से, पुराने नियम के अन्तर्गत रहने वाले व्यक्ति चरित्रहीन या अनैतिक कार्य किए बिना भी अशुद्ध हो सकते थे। ऐसा उनकी किसी गलती के बिना भी हो सकता था। इसलिए व्यक्ति को पापी बने बिना अशुद्ध माना जा सकता था।

4. व्यवस्था में अशुद्धता के लिए समाधान दिया गया था। व्यवस्था निर्धारित करती थी कि अशुद्ध हो गए व्यक्ति को क्या करना है। उसमें प्रावधान थे, जिनसे जो अशुद्ध हो गए हैं वे फिर से शुद्ध हो जाएँ। सामान्यतः, शुद्ध होने के लिए समय लगता था। गौण स्थितियों में, व्यक्ति "संध्या तक," अर्थात शेष दिन भर, अशुद्ध रहता था। अन्य और महत्वपूर्ण स्थितियों में, व्यक्ति और अधिक दिनों तक अशुद्ध रहता था - सात या चौदह दिन। व्यक्तिगत अशुद्धता के विषय में, पुनः शुद्ध होने के लिए व्यक्ति को नहाने के द्वारा, और कभी-कभी वस्त्रों को धोने के द्वारा स्वयं को शुद्ध करना होता था। इसके अतिरिक्त, शुद्ध पहचाने जाने के लिए बहुधा निवास-स्थान की वेदी पर बलिदान चढ़ाना होता था। इसमें याजक को सम्मिलित किया

जाता था, जो चढ़ावे को स्वीकार कर के बलिदान चढ़ाता था। कभी-कभी इससे पहले कि व्यक्ति फिर से शुद्ध माना जाए, उसे आधिकारिक घोषणा करनी होती थी।

5. अशुद्धता से पाप हो सकता था। यद्यपि अशुद्ध होना पाप नहीं था, परन्तु अशुद्धता दो दशाओं में पाप का अवसर हो सकती थी। पहला, वह जो अशुद्ध है उसे किसी भी पवित्र वस्तु के साथ संपर्क में नहीं आना था। उदाहरण के लिए, यदि वह अशुद्धता की दशा में निवास-स्थान के आँगन में प्रवेश कर लेता, तो वह पाप करता और उसे दण्ड उठाना पड़ता। दूसरे, यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति जानते-बूझते हुए शुद्ध होने के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन नहीं करता, तो वह पाप करता। वह भी व्यवस्था द्वारा निर्धारित दण्ड को उठाता।

अशुद्धता के लिए परमेश्वर के नियमों का क्या कारण था?

क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में "अशुद्धता" परमेश्वर की पवित्र वस्तुओं को दूषित कर देती, इसलिए उसने नियम दिए जिससे वे पवित्र वस्तुएँ दूषित न हों। लैव्यव्यवस्था15:31 कहती है, "इस प्रकार से तुम इस्राएलियों को उनकी अशुद्धता से अलग रखा करो, कहीं ऐसा न हो कि वे यहोवा के निवास को जो उनके बीच में है अशुद्ध कर के अपनी अशुद्धता में फंसे हुए मर जाएं।" अशुद्धता से संबंधित नियम इस्राएलियों की रक्षा करते थे और जब वे परमेश्वर के पवित्र निवास-स्थान के संपर्क में आते थे तो उन्हें मरने से बचाते थे।

अवश्य ही ये नियम इस्राएलियों के स्वास्थ्य और भलाई में योगदान देते थे (निर्गमन 15:26; व्यव. 7:15)। इस्राएलियों के लिए, सूचीबद्ध अशुद्ध जन्तुओं के खाने के स्थान पर, शुद्ध पशुओं और मछलियों और पक्षियों को खाना अधिक स्वस्थ होता। साथ ही, इन नियमों में हम धोने पर दिए गए बल को भी देखते हैं जिससे निःसंदेह एक स्वस्थ पर्यावरण के लिए सहायता मिलती। इसी प्रकार से, जो रोगी प्रतीत होते थे, ऐसे लोगों (और वस्तुओं) को पृथक कर देने के स्वास्थ्य लाभ प्रकट हैं। अनेकों नियमों को उनके स्वास्थ्य लाभों के विषय में उदधृत किया गया है। हम यह मान सकते हैं कि इतिहास में परमेश्वर जो कुछ भी लोगों से चाहता है, वह उनके भले ही के लिए होता है।

ऐसा संभव है कि परमेश्वर ने अशुद्धता संबंधी ये नियम अपने लोगों की अन्य लोगों से भिन्नता की पहचान के लिए दिए थे। बाद के वर्षों में, उनके द्वारा इन नियमों (विशेषतया भोजन संबंधी नियमों) के पालन से अन्य लोगों को यहूदी "विचित्र लोग"[12] लगने लगे थे। इसके अतिरिक्त, उनके द्वारा इन नियमों, जैसे कि यौन संबंधों और मृत्यु से संबंधित, के प्रति आज्ञाकारिता के कारण उनके लिए अन्यजाति-मूर्तिपूजकों की पापमय पूजा, जैसे जिनके मध्य में वे रहते थे उनके द्वारा की जाती थी, में सम्मिलित होना असंभव हो जाता।[13]

यद्यपि हम उन सभी कारणों को नहीं जानते हैं जिनके कारण परमेश्वर ने अशुद्धता के ये नियम दिए, हम यह जानते हैं कि इन नियमों को उसने ही दिया

था और इस्राएलियों को उनका पालन करना था। चाहे हम पूर्णतः समझ भी जाते कि परमेश्वर ने इस्राएल को शुद्धता और अशुद्धता से संबंधित नियम क्यों दिए थे, तो भी उन नियमों को आज लागू करने के विषय में हमें प्रश्न पूछने ही पड़ते।

अशुद्धता के नियम आज हम पर कैसे लागू होते हैं?

हम जब पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो हमें विचार करते रहना चाहिए कि "यह मुझपर कैसे लागू होता है?" यद्यपि हम समझते हैं कि मूसा की व्यवस्था हटा दी गई है (कुलु. 2:14) जिससे उसके निर्देश हम पर सीधे से लागू नहीं होते हैं, साथ ही हम यह भी जानते हैं कि पुराने नियम को पढ़ना मसीहियों के लिए लाभप्रद है (रोमियों 15:4; 1 कुरि. 10:11; 2 तीमु. 3:16, 17)। इसलिए हमें अपेक्षा रखनी चाहिए कि ऐसे विचित्र नियमों में से भी, जैसे कि अशुद्धता से संबंधित नियम हैं, हमारे लिए कुछ सहायक मिलेगा। हम उन से क्या सीख सकते हैं?

हमें क्या नहीं सीखना है

आरंभ करने के लिए, हम यह देखते हैं कि हमें उन से क्या *नहीं* सीखना चाहिए: हमें ऐसा कदापि नहीं मान लेना चाहिए कि जो इस्राएलियों के लिए उस समय अशुद्ध था वह आज हमारे लिए भी अशुद्ध है। नया नियम कहता है कि पुरानी वाचा हटा दी गई है (इफि. 2:15)।[14] परिणामस्वरूप, उसके कोई भी नियम, शुद्धता और अशुद्धता से संबंधित नियमों सहित, अब मसीही युग में रहने वालों पर सीधे से लागू नहीं करने चाहिए।

नया नियम कहता है कि इस युग में, परमेश्वर ने पुराने नियम की शुद्ध और अशुद्ध की भिन्नता को मिटा दिया है। मरकुस 7:19 कहता है कि यीशु ने "सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया।" इस विषय पर चर्चा करते हुए कि रोम के मसीहियों को मांस खाना चाहिए या नहीं (क्योंकि बाज़ार से क्रय किया गया मांस, संभवतः मूर्तियों को अर्पित किया गया होता था, इसलिए अशुद्ध था), पौलुस ने लिखा, "मैं जानता हूं, और प्रभु यीशु में मुझे निश्चय हुआ है, कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं" (रोमियों 14:14)।

जब परमेश्वर ने चाहा कि पतरस अन्यजातियों में जाकर सुसमाचार का सर्वप्रथम प्रचार करे, तो उसको दर्शन दिखाया जिसमें "पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे।" उसने पतरस से कहा, "हे पतरस उठ, मार और खा!" पतरस ने उत्तर दिया, "नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।" फिर उससे कहा गया, "जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह" (प्रेरितों 10:12-15)। दर्शन का अभिप्राय था पतरस को सिखाना कि वह अन्यजातियों को "अशुद्ध" न समझे; उन्हें भी वैसे ही सुसमाचार सिखाना था जैसे यहूदियों को। परन्तु यह दर्शन यह भी सिखाता है कि परमेश्वर संसार के जन्तुओं में अब कोई भिन्नता नहीं करता है। कोई अशुद्ध नहीं है। उनमें से कोई भी, जो व्यवस्था के अन्तर्गत अशुद्ध समझे

जाते थे, उनके सहित, मारे और खाए जा सकते हैं।[15]

इसलिए, आज मसीहियों को यह निष्कर्ष लेना चाहिए कि अशुद्धता से संबंधित कोई भी नियम हम पर लागू नहीं होता है। क्या हम सूअर का मांस खा सकते हैं? हाँ! क्या हम बिना चोंयेटे की मछलियाँ खा सकते हैं? हाँ! क्या बच्चे का जनना या "शरीर का कोई स्राव" आज व्यक्ति को विधिवत अशुद्ध बना सकता है? नहीं! अशुद्धता से संबंधित नियम अब लागू नहीं हैं।

हमें क्या सीखना चाहिए

हम सकारात्मक दृष्टिकोण से नियमों का पुनः अवलोकन कर सकते हैं। मूसा के अशुद्धता संबंधित नियमों से हमें कुछ पाठ सीखने चाहिए।

1. भोजन से संबंधित अशुद्धता के नियम आज लागू नहीं हैं, परन्तु मसीहियों को उन में से कुछ का पालन अन्य मसीहियों के लिए करना चाहिए। यह नीति, कम से कम नए नियम के समय में तो आवश्यक थी। पौलुस के यह कहने के पश्चात कि वह जानता है कि "कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं," उसने साथ ही यह भी कहा, "परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है, उसके लिये अशुद्ध है" (रोमियों 14:14)। इस कारण पौलुस ने उन मसीहियों से जो यह समझते थे कि वे कुछ भी खा सकते हैं - वह चाहे जो भी हो या कहीं से भी क्रय किया गया हो या कैसे भी वध किया गया हो - यह आग्रह किया कि यदि उनके मांस खाने से अन्य मसीही पाप कर बैठते हैं तो वे मांस न खाएं (रोमियों 14:20, 21)। आज यदि कोई भाई यह मानता है कि कुछ भोजन-वस्तुएँ अशुद्ध हैं, तो वह उन से बच कर रहे। यद्यपि उन्हें खाना अपने आप में गलत नहीं होगा, परन्तु उसके लिए अपने विवेक को अशुद्ध करना गलत होगा। इसके अतिरिक्त, हमें भी ऐसा करने से बचे रहना चाहिए - इसलिए नहीं कि यह गलत होगा, वरन हमारे भाई को ठोकर लगने से बचाए रखने के लिए।

2. यद्यपि आज हम पर अशुद्धता से संबंधित नियम लागू नहीं हैं, फिर भी उन में से कुछ ऐसी रीतियों का सुझाव देते हैं जो भली या सभी आयु के लोगों के लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं। हम में से अधिकांश अपने हाथ और वस्त्र धो लेते हैं जब वे दूषित हो जाते हैं। अवश्य ही हम ऐसा इसलिए नहीं करते हैं क्योंकि लैव्यव्यवस्था में ये नियम दिए गए हैं, वरन इसलिए क्योंकि उन नियमों द्वारा स्थापित व्यवहार का भला अभिप्राय है। इसी प्रकार से, छूत की बीमारी के रोगी को औरों से पृथक रखा जाता है। संभव है कि स्वास्थ्यवर्धक जीवन जीने के लिए हम अन्य नियमों से भी कुछ सीख सकते हैं।

3. अशुद्धता के नियमों को सबसे अच्छे प्रकार से लागू करने के लिए उन्हें नए नियम के निर्देशों की छाया के समान देखना चाहिए। ये निर्देश विधिगत अशुद्धता या दूषित होने को वर्जित नहीं करते हैं, वरन वे पाप के कारण आत्मिक अशुद्धता को वर्जित करते हैं। नया नियम मसीहियों के लिए विधिवत शुद्धता की माँग नहीं करता है, परन्तु नैतिक रीति से शुद्धता माँगता है। पौलुस ने लिखा, "अपने आप को पवित्र बनाए रख" (1 तीमु. 5:22; KJV)। इसे NASB कहता है

"अपने आप को पाप से बचाए रख।" कुरिन्थियों को उसने लिखा, "हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें" (2 कुरि. 7:1)। याकूब ने कहा, "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें" (याकूब 1:27)। यूहन्ना ने कहा "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो" (1 यूहन्ना 2:15)।

हमें यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि जैसे इस्राएल "पवित्र प्रजा" था, वैसे ही कलीसिया भी है। आज, परमेश्वर की "पवित्र प्रजा" होने के कारण, हमें भरसक प्रयास करते रहना चाहिए कि हम अशुद्धता से मुक्त रहें, और अपने आप को तथा कलीसिया को, जो हम से बनी है, पाप से मुक्त रखें। हम यह कैसे कर सकते हैं? जो भी हम कहते अथवा करते हैं उसे, यह पूछकर जाँचने के द्वारा, "क्या यह मुझे पाप में ले जाएगा? क्या यह अशुद्ध और अपवित्र है? क्या इससे अपवित्र विचारों और कार्यों को सहयोग मिलेगा?" मसीही होने के कारण हमें सचेत रहना चाहिए कि हम किन शब्दों का प्रयोग करते हैं, हम क्या पहनते हैं, हम कहाँ जाते हैं, हमारे मित्र कौन हैं, हम क्या पढ़ते हैं, हम क्या देखते हैं, हम मनोरंजन के लिए क्या करते हैं, और हम क्या पीते हैं। इनमें से किसी भी बात को हमें प्रलोभन तथा पाप में नहीं ले जाने देना चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि हम शुद्ध हों, परन्तु यह हम पर है कि हम अपने आप को "संसार से निष्कलंक रखें।"

आज शुद्ध और अशुद्ध भोजनों में भेद करना हमारे लिए आवश्यक नहीं है। जैसे भोजन का हम उपभोग करते हैं उसके स्थान पर हमें इसकी चिंता करनी चाहिए कि हम किन विचारों और चित्रों का उपभोग करते हैं। जो अश्लीलता का "उपभोग" करता है वह स्वामी की सेवा के लिए उपयोगी स्वच्छ और पवित्र पात्र नहीं हो सकता है। यदि हमारे मन भौतिक अभिलाषाओं से अव्यवस्थित हैं या घृणा से या प्रतिशोध की भावना से भरे हुए हैं, तो परमेश्वर अपनी महिमा के लिए हमें सकारात्मक रीति से प्रयोग नहीं कर सकता है। हम सावधान रहें कि हम अपने मनों में क्या ले लेते हैं। हम केवल भली और हितकर बातों के विषय में ही विचार करें (फिलि. 4:8)।

उपसंहार

लैव्यव्यवस्था पवित्रता के विषय में है। परमेश्वर ने इस्राएल को पवित्र जाति होने के लिए बुलाया, लहू के द्वारा शुद्ध किया गया और अशुद्धता से मुक्त किया गया। इसी प्रकार, परमेश्वर चाहता है, आज उसके लोग, मसीह के लहू से शुद्ध किए हुए पवित्र प्रजा और पाप के दोष से मुक्त हों।

कोई यह आपत्ति उठा सकता है, "परन्तु पाप करने से बचकर रहना कठिन है!" यह सत्य है; वास्तव में हम सभी पाप करते हैं (रोमियों 3:23; 1 यूहन्ना 1:8, 10)। पाप बुरा समाचार है, परन्तु सुसमाचार भी है। जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा की

व्यवस्था के अन्तर्गत, प्रावधान कि जो अशुद्ध हो जाते हैं वे शुद्ध किए जाएँ, परमेश्वर ने हमारे लिए मार्ग तैयार किया है कि जब हम पाप के कारण अशुद्ध हो जाएँ, तो उस पाप के लिए क्षमा भी प्राप्त कर लें। यह मार्ग मसीह है (यूहन्ना 14:6)। वह नई वाचा का मध्यस्थ और महायाजक है (1 तीमु. 2:5; इब्रा. 8:1, 6)। वह हमारे लिए पिता के सामने विनती करता है (इब्रा. 7:25)। यूहन्ना ने कहा, "यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह" (1 यूहन्ना 2:1)। उसके नाम में हम धोए गए, पवित्र किए गए, और धर्मी ठहराए गए हैं (1 कुरिन्थियों 6:11)।

जैसा कि पुराने नियम के समय में था, आज भी, स्वच्छ होने के लिए लोगों को कुछ करना पड़ता है। जो मसीही नहीं हैं उन्हें मसीह में विश्वास करने और बपतिस्मा लेने के द्वारा सुसमाचार की आज्ञा का पालन करने का आवाहन है (मरकुस 16:16)। जो मसीही हैं, उन्हें अपने पापों का अंगीकार और उनसे पश्चाताप करना है (प्रेरितों 8:22; देखें 1 यूहन्ना 1:9)। मूसा के समय में, अशुद्ध व्यक्ति को अपने आप को जल से धोना होता था। नए नियम के समय में, पाप से स्वच्छ होने के लिए, हमें परमेश्वर के मेमने के लहू में धुलना है। उसका लहू आपके लिए उपलब्ध है यदि आप वह करना चाहते हैं जो प्रभु आपसे चाहता है कि आप करें। क्या आप अशुद्ध हैं? आप शुद्ध किए जा सकते हैं यदि आप "मेमने के लहू में धुलने" के लिए तैयार हैं।

कोय डी. रोपर

समाप्ति नोट्स

[1]लैव्यव्यवस्था 15 की व्यत्यासिका संरचना का विवरण गॉर्डन जे. वेनहैम, *द बुक आफ लैव्यव्यवस्था*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 217 में पाया जाता है। [2]जेकब मिलग्रोम, "द बुक आफ लैव्यव्यवस्था," *दि इन्टरप्रेटर्स वन वोल्यूम कमेंट्री आन द बाइबल*, सम्पादक चार्ल्स एम. लेमन (नैशविलः अबिंगदन प्रेस, 1971), 77. [3]इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद "बहना" (KJV) किया गया है वह तीसरी आयत में वर्णित समस्या को प्रकट करता है। "इब्रानी बाइबल में यह शब्द (इब्रानी *rār*) अन्यत्र नहीं पाया जाता है, लेकिन इसका संबंध एक संज्ञा *rîr*, से किया गया है जिसका अर्थ 'पतला द्रव्य' या 'लार' (*cf.* 1 शमूएल [21]:13; जेबी 6:6)" (आर. के. हैरीसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज [डॉनर्स ग्रूव, इलनॉइसः इंटर-वार्सिटी प्रेस, 1980], 160). [4]प्राचीन काल से ही इस व्याधि को प्रमेह समझा गया है। (जोसेफस *वार्स* 6.9.3.) [5]उदाहरण के लिए आर. लैयर्ड हैरिस के अनुसार, "आज भी दक्षिण पूर्व देशों में दस्त सामान्य है और कभी-कभी यह कई अन्य गम्भीर बीमारियों का लक्षण भी है।" उन्होंने यह भी कहा कि इस अनुच्छेद में दूसरे बीमारियों की तुलना में इसकी "मनाही, दस्त के लिए बेहत्तर जान पड़ता है।" (आर. लैयर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," *दि एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री,* खण्ड 2, *उत्पत्ति- गिनती*, सम्पादक फ्रैंक ई. गैबलीन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990], 586)। इस अनुच्छेद में "शरीर" शब्द का अर्थ "देह" है जिसका प्रयोग किसी भी पुरुष या स्त्री के लिए किया जा सकता है; इसलिए, हैरिस के अनुसार, इस अनुच्छेद का प्रयोग स्त्री और पुरुष दोनों के लिए किया जा सकता है। फिर भी, इस अनुच्छेद की संरचना और विषय, इस बात पर तर्क करता है कि यह अनुच्छेद का प्रयोग केवल पुरूषों के जनानांगो

से उत्सर्जन के लिए ही लागू होता है। इसलिए, यहाँ ऐसा नहीं लगता है कि इसका अर्थ दस्त है, क्योंकि यह बीमारी स्त्री और पुरुष दोनों को प्रभावित कर सकता है और यह पुरुष के जनानांग से संबंधित नहीं है। [6]वारेन डब्ल्यु. वीर्यसबी, *बी होली* (व्हीटन, इलनॉइसः विक्टर बुक्स, 1994), 65. [7]वेनहैम, 223-24. [8]इब्रानी पाठ में, "निवासस्थान" (מִשְׁכָּן, *मिश्कान)* का शाब्दिक अर्थ "निवासस्थान" या "रहने का स्थान" है (देखें NAB; NJB)। जॉर्ज ए. एफ. नाइट ने आयत 31 की निवास्थान की तुलना, मनुष्य के शरीर से की है: "जैसे आयत 31 में स्पष्ट किया गया है कि इन सभी प्राथमिक व्यवस्था का उद्देश्य यह है कि मनुष्य के सुंदर शरीर की रहस्य जिसे परमेश्वर ने बनाया है और जो उसने हमें एक पवित्र वस्तु के रूप में दिया है, के विरूद्ध अशुद्धता अपराध है" (जॉर्ज ए. एफ. नाइट, *लैव्यव्यवस्था,* द डेली स्टडी बाइबल [फिलाडेलफियाः वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1981], 83)। जबकि आज नाइट का परमेश्वर के निवासस्थान के प्रति विचार सत्य है (1 कुरिं. 6:19), लेकिन इसकी भी संभावना जताई जाती है कि इस आयत में जिस निवासस्थान के बारे में कहा गया था, वस्तुतः, वह वास्तविक निवासस्थान है। [9]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती,* दि NIV अप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः जॉडरवैन, 2004), 261-62. [10]वेनहैम, 222-23.

[11]रिचर्ड एन. बॉईस ने उन बातों के बारे में जिनको "अशुद्ध" जैसे "फूटने वाले" रोग की तुलना शरीर में चर्म रोग में "फूटने वाले" रोग से की जिसका विश्लेषण अध्याय 13 और 14 में किया गया है। उन्होंने कहा कि सभी फूटने वाले या स्खलन, चाहे वे भी जो अच्छे हैं और प्रजनन में सहायक है, "आराधना में पुनः प्रवेश करने से पहले उनकी ओर हमारी कुछ प्रत्युत्तर करने की आवश्यकता है" (रिचर्ड एन. बॉईस, *लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती,* वेस्टमिंस्टर बाइबल कंपैनियन [लुईविलः वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 2008], 51)। [12]यह अभिव्यक्ति KJV में 1 पतरस 2:9 से ली गई है, जहाँ इसका प्रयोग महीसियों का विवरण देने के लिए किया गया है। [13]इन तथा अन्य संभावनाओं को जौन ई. हार्टले, "होली एण्ड होलीनेस, क्लीन एण्ड अन्क्लीन," *डिक्शनरी ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट: पेंटात्यूक,* एड. टी. डेसमंड डब्ल्यू. बेकर (डाउनर ग्रोव इल्लिनोयः इन्टरवर्सिटी प्रैस, 2003), 426-29 में किया गया है। [14]जब मसीह आया, तो उसने पुरानी व्यवस्था को पूरा कर दिया (मत्ती 5:17; कुलु. 2:14)। लगभग सभी दस आज्ञाए, नए नियम में भी दी गई हैं, और हमें नए नियम के अनुसार चलना है। [15]नए नियम के अन्य खण्ड भी हैं जो भोजन संबंधी नियमों को बाध्य करने की भ्रांति को दिखाते हैं (देखिए 1 कुरि. 8:8; कुलु. 2:16-23; 1 तिमु. 4:1-6)।